मानदण्ड निर्धारित करते हैं और व्यक्ति उन्हीं के अनुसार अपने व्यवहार को करने का प्रयत्न करता है। यह व्यक्ति को मूल्य प्रदान करता है, जिन्हें व्यक्ति अपने व्यक्तित्व में आत्मसात कर लेता है।

2. **तुलनात्मक प्रकार** — ये वैसे संदर्भ समूह हैं, जिनमें व्यक्ति अपना तथा अन्य व्यक्तियों का तुलनात्मक मूल्यांकन करता है।

संदर्भ समूह सम्बन्धी सिद्धांत

1. **हाइमैन के विचार** —

हाइमैन ने 1942 ई० में 'Reference Group' शब्द का प्रयोग अपनी पुस्तक 'दी साइकोलॉजी ऑफ स्टेटस' में किया। हाइमैन के अनुसार व्यक्ति के व्यवहार-प्रतिमान और उसकी स्थिती (Status) का विश्लेषण केवल वह जिस समूह का सदस्य है, के जान लेने से नहीं किया जा सकता। वास्तव में व्यक्ति अन्य समूहें जिन्हें वह आदर्श मानता है तथा जिसका सदस्य बनने की आकांक्षा रखता है, उनके मूल्यों एवं आदर्शों से भी प्रभावित होता है। ये समूह उसके संदर्भ समूह होते हैं। व्यक्ति मनोवैज्ञानिक रूप से इन समूहों से सम्बद्ध होता है और अपने व्यवहार और मूल्यों को इन्हीं के अनुरूप निर्धारित करता है। यद्यपि व्यक्ति इन समूहें का सदस्य नहीं होता लेकिन ये उसके लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण होते हैं और उसके व्यवहार पर उस समूह का अत्यधिक प्रभाव होता है।

शेरिफ तथा शेरिफ के विचार —

प्रत्येक व्यक्ति का संपर्क आज के आधुनिक जटिल युग में एक से अधिक समूहें से होता है। प्रत्येक समूह मूल्य, आदर्श, विचारधाराएँ एवं व्यवहार प्रतिमान होते हैं। इन समूह के सदस्य अपने व्यक्तित्व में इन मूल्यों, आदर्शों एवं व्यवहार प्रतिमानों का आन्तरीकरण कर लेते हैं। आन्तरिकरण की प्रक्रिया अचेतन रूप में होती है तथा व्यक्ति यह जान भी नहीं पाता कि उसने कब इन सबको ग्रहण किया है। ये मूल्य और आदर्श उसके व्यवहार के मानदण्ड होते हैं। यही समूह उसका संदर्भ या आदर्श समूह होता है। जैसे - मध्यम और निम्न वर्ग के सदस्य अपने को उच्च वर्ग से सम्बद्ध मानता है और अपने रहन-सहन, व्यवहार, अनुभव आदि उच्च वर्ग के अनुसार करता है, तो उच्च वर्ग उसका संदर्भ समूह है।

मर्टन के विचार —

मर्टन के अनुसार एक व्यक्ति का संदर्भ समूह उसका अपना अन्तः समूह अर्थात् वह जिसका सदस्य है और वह बाह्य समूह भी हो सकता है जिसका कि वह सदस्य नहीं है। प्रथम अवस्था में अन्तः समूह ही उसके सदस्य के लिए संदर्भ समूह का कार्य करते हैं, जबकि दूसरी आवस्था में बाह्य समूह इस संदर्भ के लिए चुने जाते हैं। अपने अनुभवात्मक अध्ययन के आधार पर संदर्भ समूह से सम्बन्धित अपने विचारों या निष्कर्षों को मर्टन इस रूप में व्यक्त करते हैं :-

1. **अन्तः समूह या सदस्यता समूह, संदर्भ समूह के रूप में** — बहुधा एक व्यक्ति अपने ही समूह के उन दूसरे व्यक्तियों के उपसमूह को अपना संदर्भ समूह मानने लगता है, जिनकी उपलब्धियाँ अधिक हैं।
2. **गैर सदस्यता समूह के रूप में** — जिन समूहों के हम वास्तविक सदस्य नहीं होते और जिनके सदस्यों के साथ हम किसी प्रकार की अन्तःक्रिया नहीं करते, तो भी, यदि वह समूह हमारे व्यवहारों, आदर्शों, तथा मूल्यों को प्रभावित कर के अपने अनुरूप ढालते हैं, तो वह गैर सदस्यता समूह भी हमारे लिए संदर्भ समूह होगा।
3. **दूसरे विशिष्ट** — प्रत्येक व्यक्ति के सामने समाज में प्रतिष्ठित समझे जाने वाले लोगों की प्रतिमा होती है, जिन्हें हम 'दूसरे विशिष्ट' कह सकते हैं। समाज के अन्य व्यक्ति इन विशिष्ट लोगों मूल्यों, आदर्शों तथा आचरणों को ग्रहण कर उन्ही जैसा विशिष्ट बनना चाहते हैं। ये उनका संदर्भ समूह होता है।
4. **सकारात्मक और नकारात्मक समूह** — संदर्भ समूह सकारात्मक भी हो सकते हैं और नकारात्मक भी। एक व्यक्ति अपने संदर्भ के रूप में ऐसे समूह (जैसे- तस्कर, अपराधी) को भी चुन सकता है, जिसका प्रभाव नकारात्मक हो।

by- Dr. Sangeeta Prakash

Scanned with CamScanner